IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

मार्कण्डेय के कथा साहित्य में ग्रामीण चेतना : राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में

Dr. Jay Prakesh Yadav[1] and Sunil Kumar Yadav[2]
Research Supervisor and Associate Professor[1]
Research Scholar, Department of Hindi[2]
Multani Mal Modi (PG) College, Modinagar, Ghaziabad, Uttar Pradesh, India[1]
Chaudhary Charan Singh University, Meerut, Uttar Pradesh, India[2]

शोध सारांश :

भारत देश की 75 प्रतिशत आबादी गाँवों में बसती है, इसलिये हमारे यहाँ की असली जीवन–शैली एवं संस्कृति के दर्शन गाँव में ही मिलते हैं। परिस्थिति वश ही सही लेकिन गाँव और शहर की जीवन–शैली में जमीन आसमान का अंतर होता है, और हमारे अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि ही है जो कि मात्र गाँव में ही संभव है, **"भारतीय जीवन का अर्थावलम्बन कृषि पर हैं या यों कहिए कि भारत कृषि प्रधान देश है तथा कृषि का विस्तृत स्वरूप हमें ग्राम्य जीवन में ही परिलक्षित होता है।** ग्रामीण जीवन की आर्थिक परिस्थितियाँ केवल कृषि एवं कुटीर धंधों पर ही निर्भर है, कोई फसल उगाता है, तो कोई लुहार है, तो कोई मोची, तो कोई बढ़ई, तो कोई जुलाहा, तो कोई कुम्हार है, तो कोई बाँस के बरतन बनाता है, सब अपनी रोजी–रोटी की व्यवस्था बनाने के लिये छोटे–छोटे काम करते हैं। इन सबके बावजूद भी ये स्वयं और परिवार का पेट पालने में पूरी तरह से समर्थ नहीं हो पाते हैं, और अपना जीवन निर्धनता एवं लाचारी के साथ व्यतीत करते हैं।

मुख्य शब्द : मार्कण्डेय, कथा, साहित्य, ग्रामीण, चेतना, राजनीतिक, आर्थिक, परिप्रेक्ष्य, भारत, जीवन, कृषि आदि।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. 'प्रेमचंद का कहानी–दर्शन', डॉ0 कमल किशोर गोयनका, अनिल प्रकाशन, दिल्ली, 2014 पृष्ठ 30
[2]. 'मार्कण्डेय : परंपरा और विकास', भूमिका, संपादक प्रकाश त्रिपाठी, वचन पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 2010 पृष्ठ 235
[3]. 'परिवर्तित मुद्राओं के साथ–'बीच के लोग', चन्द्रभूषण तिवारी, संपादकीय समीक्षा, 'वाम', अंक–1, पृष्ठ 4
[4]. 'सेमल का फूल', अग्निबीज, पृष्ठ 44
[5]. 'नौ सौ रूपये और एक ऊँट दाना', मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 106

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

[6]. 'अग्निबीज', मार्कण्डेय, पृष्ठ 31

[7]. 'मुंशीजी', मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 66

[8]. 'बीच के लोग', मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 482

[9]. 'रामलाल', मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 52

[10]. 'संगीत, आँसू और इन्सान', मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 59

[11]. 'मुंशीजी', मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 67

[12]. 'बातचीत', मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 238

[13]. 'दाना–भूसा', मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 206

[14]. 'मधुपुर के सिवान का एक कोना', मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002, पृष्ठ 425

[15]. 'चाँद का टुकड़ा', मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 226

[16]. 'नौ सौ रूपये और एक ऊँट दाना', मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 113

[17]. रामदरश मिश्रा के कथा साहित्य में ग्राम्य जीवन, डॉ. वी.पी. चौहान, चिंतन प्रकाशन, कानपुर, 2004, पृष्ठ 134

[18]. 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना', डॉ. ज्ञानचंद गुप्त, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली, 1974, पृष्ठ 102

[19]. 'हिन्दी कहानी का इतिहास–2 : 1951–1975', गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ 16

[20]. 'कल्यानमन', मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 191

[21]. 'बीच के लोग', मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 495

[22]. 'हलयोग', मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 74

[23]. 'मिथिलेश्वर की कहानियों में ग्रामीण यथार्थ', उद्धृत, डॉ. वर्षा मिश्रा, क्वालिटी बुक्स, कानपुर, 2004, पृष्ठ 3

[24]. 'भूदान', मार्कण्डेय की कहानियाँ, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002 पृष्ठ 277

[25]. 'नई कहानी की मूल संवेदना, डॉ0 सुरेश सिन्हा, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली, 1966, पृष्ठ 166

[26]. 'धूमिल की श्रेष्ठ कविताएँ, पटकथा से', संपादक ब्रह्मदेव मिश्र एवं शिव कुमार मिश्र, पृष्ठ 99